

प्रतापगढ़ संदेश

होम्योपैथिक चिकित्सा से ही जड़ से समाप्त होती है बीमारी: विनोद सोनकर मंडल स्तरीय होम्योपैथिक चिकित्सा मेला का सांसद ने किया शुभारंभ

अखंड भारत संदेश

कुण्डा, प्रतापगढ़। होम्योपैथिक चिकित्सा से ही बीमारी जड़ से समाप्त होती है। जब लोग बीमार होते हैं तो हर जगह से दवा करने के बाद अंत में होम्योपैथिक चिकित्सा से उपचार करते हैं। प्रदेश सरकार द्वारा इस तह पर्याप्त मेला से लोगों को अधिक लाभ होता है। गोतानी गांव में आयोजित मंडल स्तरीय होम्योपैथिक चिकित्सा मेला में अधिक से अधिक लोगों को लाभ मिलेगा।

उक्त बातें सांसद कौशांगी/भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय सचिव/चेयरमैन संसदीय आचार समिति लोकसभा एवं प्रधारी दादर नगर हवेली विनोद सोनकर ने सोमवार को कुण्डा क्षेत्र के गोतानी गांव में मंडल स्तरीय होम्योपैथिक चिकित्सा मेला में अधिक से अधिक लोगों को लाभ मिलेगा।



चिकित्सा मेला का फोटो काटकर शुभारंभ करते सांसद विनोद सोनकर।

सांसद विनोद सोनकर ने कहा कि केवल एक प्रदेश सरकार द्वारा जन कल्याण हेतु बहुत सी योजनाएं चलाई जा रही हैं। सरकार को

योजनाएं आज सीधे लाभार्थी के पास पहुंच रही हैं।

कुण्डा क्षेत्र में विकास कार्य 2014 से लगातार चल रहा है। कुण्डा

के लोगों को जल्द ही जाम से मुक्ति मिलेगी। रेलवे लाइन पर ओवर ब्रिज बनाया जाएगा। कार्यक्रम के बाद गोतानी में गोजेश सोनकर, मठदारा

में गुरुन सोनकर, कुण्डा में संजय सोनकर, एवं जिला महामंत्री सतीश चैरसिया के यहाँ पहुंच कर परिवारिक सदय के निम्न पर शोक संवेदना व्यक्त की। कार्यक्रम में भाजपा के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य पूर्व प्रवायारा शिव प्रकाश मिश्र सेनानी, पूर्व प्रवायारा योगेन्द्र नाथ मिश्र मीला, सांसद मीडिया प्रभारी धूपेन घाउड़े, मुख्य चिकित्सा अधिकारी प्रयागराज डाक, सुमन रहे जा, जिला होम्योपैथिक चिकित्सा अधिकारी प्रतापगढ़ डाक आशुतोष कुमार मिश्र, पूर्व जिला उपाध्यक्ष सोनकर, उत्तर शंकर पाण्डेय, देवराज शुक्ल, विनोद पाण्डेय, गोलू शुक्ल, मायापति तिवारी, सरोज तिवारी, महेश सिंह, गुदून सोनकर, आशुतोष जायसवाल, मोनोज सोनकर सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। श्री रामलीला समिति

द्वारा आठवें दिन राम और कुम्भकरण युद्ध की छांकी निकाली गई। तीन बजे दिन में गोपाल मंदिर से राम व कुम्भकरण युद्ध की छांकी निकलकर चैक होते हुए रामलीला मैदान में श्री राम और कुम्भकरण का ध्वनि बहु द्वारा।

युद्ध में भगवान् श्री राम कुम्भकरण को मार पिया। कुम्भकरण के मरते ही सैनिकों में कोहराम मच गया। रावण विलाप करने लगा। राघवों में भय लगा हो गया। श्री राम और कुम्भकरण का युद्ध देखने के लिए रामलीला मैदान पर हजारों कि संख्या में भक्त उपस्थित रहे। रामलीला मैदान से वापस पंजाबी मार्केट होते हुए गोपाल मील आकर लीला पर विश्राम दिया गया।

इस अवसर पर संरक्षक रोशनलाल उमरवैश्य, अध्यक्ष संजय खंडे लावाला, संयोजक दिनेश सिंह दिन्हु, मंत्री विपिन गुप्ता, कोषाच्छक मंत्री पूर्व गुप्ता, शिवमंत्री बड़ी नेता, विष्णु सांगी, सूरज, धर्मेंद्र सिंह, छेदीलाल, संतोष कुमार, देवानंद, रोहित राज,

कुम्भकरण को तीर लगते ही लगे श्री राम के जयकारे

श्री रामलीला समिति द्वारा निकाली गई। गई कुम्भकरण वध की छांकी

का ध्वनि बहु द्वारा।

युद्ध में भगवान् श्री राम कुम्भकरण को मार पिया। कुम्भकरण के मरते ही सैनिकों में कोहराम मच गया। रावण विलाप करने लगा। राघवों में भय लगा हो गया। श्री राम और कुम्भकरण का युद्ध देखने के लिए रामलीला मैदान पर हजारों कि संख्या में भक्त उपस्थित रहे। रामलीला मैदान से वापस पंजाबी मार्केट होते हुए गोपाल मील आकर लीला पर विश्राम दिया गया।

इस अवसर पर संरक्षक रोशनलाल उमरवैश्य, अध्यक्ष संजय खंडे लावाला, संयोजक दिनेश सिंह दिन्हु, मंत्री विपिन गुप्ता, कोषाच्छक मंत्री पूर्व गुप्ता, शिवमंत्री बड़ी नेता, विष्णु सांगी, सूरज, धर्मेंद्र सिंह, छेदीलाल, संतोष कुमार, देवानंद, रोहित राज,

कुम्भकरण से युद्ध करने का मंचन करते कलाकार।

धर्मेंद्र चैरसिया, विवेक कुमार, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, शालिनी अग्रवाल, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, रेखा उमरवैश्य, इंदिरा आदि रथ के साथ चल रहे थे।

धर्मेंद्र चैरसिया, विवेक कुमार, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, शालिनी अग्रवाल, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, रेखा उमरवैश्य, इंदिरा आदि रथ के साथ चल रहे थे।

धर्मेंद्र चैरसिया, विवेक कुमार, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, शालिनी अग्रवाल, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, रेखा उमरवैश्य, इंदिरा आदि रथ के साथ चल रहे थे।

धर्मेंद्र चैरसिया, विवेक कुमार, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, शालिनी अग्रवाल, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, रेखा उमरवैश्य, इंदिरा आदि रथ के साथ चल रहे थे।

धर्मेंद्र चैरसिया, विवेक कुमार, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, शालिनी अग्रवाल, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, रेखा उमरवैश्य, इंदिरा आदि रथ के साथ चल रहे थे।

धर्मेंद्र चैरसिया, विवेक कुमार, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, शालिनी अग्रवाल, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, रेखा उमरवैश्य, इंदिरा आदि रथ के साथ चल रहे थे।

धर्मेंद्र चैरसिया, विवेक कुमार, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, शालिनी अग्रवाल, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, रेखा उमरवैश्य, इंदिरा आदि रथ के साथ चल रहे थे।

धर्मेंद्र चैरसिया, विवेक कुमार, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, शालिनी अग्रवाल, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, रेखा उमरवैश्य, इंदिरा आदि रथ के साथ चल रहे थे।

धर्मेंद्र चैरसिया, विवेक कुमार, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, शालिनी अग्रवाल, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, रेखा उमरवैश्य, इंदिरा आदि रथ के साथ चल रहे थे।

धर्मेंद्र चैरसिया, विवेक कुमार, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, शालिनी अग्रवाल, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, रेखा उमरवैश्य, इंदिरा आदि रथ के साथ चल रहे थे।

धर्मेंद्र चैरसिया, विवेक कुमार, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, शालिनी अग्रवाल, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, रेखा उमरवैश्य, इंदिरा आदि रथ के साथ चल रहे थे।

धर्मेंद्र चैरसिया, विवेक कुमार, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, शालिनी अग्रवाल, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, रेखा उमरवैश्य, इंदिरा आदि रथ के साथ चल रहे थे।

धर्मेंद्र चैरसिया, विवेक कुमार, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, शालिनी अग्रवाल, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, रेखा उमरवैश्य, इंदिरा आदि रथ के साथ चल रहे थे।

धर्मेंद्र चैरसिया, विवेक कुमार, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, शालिनी अग्रवाल, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, रेखा उमरवैश्य, इंदिरा आदि रथ के साथ चल रहे थे।

धर्मेंद्र चैरसिया, विवेक कुमार, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, शालिनी अग्रवाल, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, रेखा उमरवैश्य, इंदिरा आदि रथ के साथ चल रहे थे।

धर्मेंद्र चैरसिया, विवेक कुमार, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांडे, मेघा, ज्ञानी अग्रवाल, शालिनी अग्रवाल, अर्चना खंडे लावाला, सुधा अनमिका पांड



संपादकीय

दलित अध्यापक पर जुल्म क्यों?

वाराणसी विश्वविद्यालय के दलित अध्यापक डा. मिथिलश कुमार गौतम को इसलिए नौकरी से निकाल दिया गया है कि उसने एक आपत्तिजनक ट्वीट किया था। क्या था, वह ट्वीट? उसमें गौतम ने लिखा था कि हिंदू स्त्रियां नवरात्रि के मौके पर नौ दिन उपवास रखने की बजाय संविधान और हिंदू आचार संहिता पढ़ें तो उनको गुलामी और भय से मुक्ति मिल जाएगी। गौतम के इस कथन में अतिवाद है, इसमें जरा भी शक नहीं है लेकिन उनका यह कथन अकेला होता कि हिंदू औरतें संविधान आदि पढ़ें तो उसमें कुछ भी गलत नहीं था लेकिन उन्होंने नवरात्रि के उपवास का मजाक उड़ाया, यह तो आवश्यक नहीं था। इसके बिना भी वे अपनी बात कह सकते थे। ऐसा नहीं है कि उन्होंने उंची जातियों की स्त्रियों का ही मजाक उड़ाया है। इसमें दलित स्त्रियां भी शामिल हैं। इस ट्वीट के कारण उन्हें नौकरी से निकाल देना तो उनकी गलती से भी बड़ी गलती है। भारत स्वतंत्र राष्ट्र है। इसमें हर नागरिक को अपने विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता है। यदि वह नवरात्रि या किसी भी प्रकार के उपवास को पाखंड मानता है तो मानता रहे। उसे मानने की भी स्वतंत्रता है और अपना विचार प्रकट करने की भी स्वतंत्रता है। यदि विश्वविद्यालय के अधिकारी उससे असहमत हैं तो उन्हें उसकी काट करने की भी पूरी स्वतंत्रता है। यदि वाराणसी विश्वविद्यालय के निर्णय को सही मान लिया जाए तो भारत में महर्षि दयानंद, अंबेडकर, रामास्वामी नायकर, चार्वाक आदि विचारकों की रचनाओं पर तो पूर्ण प्रतिबंध लगाना होगा। इन विचारकों ने ब्रत, उपवासों के ही नहीं, बड़े-बड़े देवताओं और भगवानों के भी धुरें बिखरे दिए हैं।

म स्वयं हितूआ आर जना क ब्रत-उपवासा, मुसलमाना क रोजा, ईसाइयों के फास्टिंग, यहूदियों के योम किपूर के उपवास आदि को जीवन में बहुत महत्वपूर्ण मानता हूँ लेकिन यदि कोई उनसे सहमत नहीं है तो वह असहमत होने के लिए स्वतंत्र है। उसे नौकरी से निकालना या उसके खिलाफ मुकदमा चलाना या उसे दंडित करना अपने आप में अधर्म है। डॉ. गौतम का कहना है कि सिर्फ उनके खिलाफ ही नहीं, जितने भी दलित अध्यापक हैं, उनके खिलाफ उस विश्वविद्यालय में तरह-तरह के अभियान चलते रहते हैं, खास तौर से हिंदुत्ववादी तत्वों द्वारा। ये हिंदुत्ववादी लोग वास्तव में हिंदुत्व क्या हैं, इसे ठीक से समझते ही नहीं हैं। ये लोग वास्तव में मध्यकालीन यूगोंप और अरब देशों में प्रचलित धार्मिक अंधविश्वास और अतिवाद की नकल करते रहते हैं। लेकिन अपने आप को स्वतंत्र विचारक कहने वालों का क्या यह कर्तव्य नहीं है कि वे आलोचना तो करें लेकिन दूसरों की भावनाओं को ठोस पहुँचाने से बचें?

रूस पर भारी पड़ता यूक्रेन के साथ युद्ध

विगत दिनों समरकद में सघाय दशा का बढ़क में वाश्वक दशा के अपील के बाद भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को शांति की महत्वपूर्ण सलाह दी थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इनको कहा है कि यह समय युद्ध नहीं शांति और सद्व्यवहार का समय है। इसमें विकास को गति दिए जाने हेतु पहल की जानी चाहिए। विश्व के सभी देशों ने अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और अन्य यूरोपीय देशों के सदस्यों ने इसका खुले दिल से स्वागत किया था और यह आशा की थी कि शायद व्लादिमीर पुतिन शांति और सद्व्यवहार पर अमल कर बातचीत के जरिए यूक्रेन के साथ कोई हल निकालेंगे। परन्तु विगत दिनों व्लादिमीर पुतिन ने यूक्रेन के चार शहरों में अपना कब्जा किया जाने और और और आक्रमण पर तेजी लाने की बात कही जिससे पूरा यूरोप और अमेरिकी प्रशासन ने रूस के विरोध में अपना मोर्चा खोल दिया है। न्यूयार्क टाइम्स के अनुसार पुतिन ने घोषणा की है कि उन्होंने रूस के कर्मसीमा के भीतर विनय कर दिया जाएगा। इसके बाद अमेरिका सहित अन्य यूरोपीय देशों ने संयुक्त राष्ट्र संघ परिषद यूक्रेन के 4 शहरों पर कब्जा किया। जाने के विरुद्ध कड़ी निंदा का प्रस्ताव किया है कि जिस पर संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद की वोटिंग हुई एवं रूस ने वोटों पावर का इस्तेमाल किया। उसे रोक दिया है कि दूसरी तरफ रूस की बड़ी घोषणा जिसके तहत पुतिन ने आंशिक सेना संग्रहण यानी आम जनता से सैनिकों की भर्ती शुरू कर दी है जिसके अंतर्गत रूस में 2.5 करोड़ सैन्य प्रशिक्षकों मैं से 3 लाख सैनिक आम जनता से भर्ती किए जाने हैं। जिसके फलस्वरूप रूस से लगे 14 देशों की सीमा से रूस के आम नागरिकों का पलायन तेजी से होने लगा है और लगभग 3 लाख से ज्यादा रूस के नागरिक आर्मेनिया, जॉर्जिया तथा अन्य देशों में भागना शुरू कर चुके हैं। आम लोगों के बीच सैन्य भर्ती का पुतिन का आदेश रूस की जनता के बीच बहुत नकारात्मक कहा गया है। रूस के कई शहरों में इस भर्ती के आदेश के विरुद्ध नागरिकों वे बड़े प्रदर्शन हुए हैं। दरअसल इस प्रदर्शन में शामिल अधिकारी बुजुग लोगों ने अपने युवा बच्चों को युद्ध में शामिल करने के विरोध में कंडक्टर सवाल उठाए हैं। उनका स्पष्ट कहना है कि इस युद्ध में लगभग 80000 रूसी सैनिक या तो मारे गए हैं या घायल हुए हैं और यह रूसी राष्ट्रपति पुतिन की सनक और तानाशाही का परिणाम ही है। पुतिन के बेहत करीब एवं प्रदर्शन संसद ने न्यूज एजेंसी को बताया कि पुतिन के इस आदेश के खिलाफ जनता में जबरदस्त आक्रोश व्याप्त हो गया है। सैटेलाइट कर्तव्य स्वीकरों और न्यूज एजेंसी की बातों पर विश्वास करें तो लाखों लोग रूस की सीमा पर टम्पे देशों में शरण लेने के लिए प्रकृत हो गए हैं।

नारा तुनिया न नयापां का दृष्ट स
उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल कर रहा है।
संभवतः आजादी के बाद यह फहला अवसर
है कि भारत के विकास की दृष्टि से नवाचार
(इनोवेशन) के जितने सफल एवं सार्थक
प्रयोग प्रधानमंत्री ने रेस्ट्र मोदी के नेतृत्व में हो रहे
हैं, उतने पूर्व में नहीं हुए हैं। उससे दुनिया में
भारत की छवि बदली है एवं प्रतिका बढ़ी है।
दुनिया में तरवरी का प्रगति का बुनियादी आधार
नवाचार ही होता है। इस क्षेत्र से भारत के लिए
सुखद और गर्व करने योग्य खबर है कि हमने
एक बड़ी छलांग लागाई है। एक साल पहले के
46वें स्थान के मुकाबले 3वा हम 40वें स्थान
पर आ गए हैं। सात साल में भारत इनोवेशन
का निर्धारण करने वाली ग्लोबल इंडेक्स में
81वें स्थान से उछलकर 40वें प्रयोगदान पर
पहुंच गया है। शीर्ष स्तर पर एक साल में छह

ज्ञान कामा नाप रखा है, परं एक वर्ष करने योग्य उपलब्धि है। भारत को इस वर्ष और तेजी से नवाचार के प्रयोग करते हुए अपनी स्थिति और स्थान में बदलती करनी चाहिए। इसके लिये एक राष्ट्रीय इनोवेशन पारिस्थितिकी तंत्र की आवश्यकता है, जो वित्त-पोषण के चक्र की शुरुआत करे, जिसके जरिए- अकादमिक क्षेत्र से नए विवर ऐडा हों, विशेष रूप से विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित, जो कि सरकार द्वारा प्रयोगित हों और सरकारी मदद से उन्हें प्रूफ-ऑफ-कॉन्सेट के स्तर तक विकसित किया जाए, जिसके बाद उद्यम निधि यानी वेंकर फंडिंग द्वारा उन्हें यापार के जरिए बाजार तक ले जाया जा सके। प्राथमिक और माध्यमिक दोनों रूपों में बाजार तक पहुँचने की आसानी, और अधिक लघीलेपन के साथ पूँजी

निरानना और उद्यम के लिए भारतीय आर्थिक विकास को गति मिले। आज, भारत में उद्यमी ऊंजल का एक बड़ा भंडार, उत्सर्जित होने की प्रतीक्षा में है। विकास के आर्थिक मॉडल के रूप में नए से नए विचारों और उद्यमशीलता के बढ़ावा देने के द्वारा, भारत अपने एक अखर से अधिक नामांकितों के लिए बेहतर जीवन सुनिश्चित करने के लिए, इनोवेशन की ताकत का इस्तेमाल कर सकता है। सरकार को नए स्टार्टअप्स और ऐसे व्यवसायों को सक्षम बनाने के लिए आगे आना चाहिए जो लोकल यानी स्थानीयता एवं स्वदेशी को महत्व देते हैं। लेकिन समृद्ध रूप से व्यैशिक प्रभाव बनाने की क्षमता रखते हैं। छोटे और मझे लो उद्यमों को बड़े स्तर पर औद्योगिक संचालन के लिए

का पारवाना बाजार तक ले जान म सन्तुष्ट होगा। ऐसा करने से हमें वैशिक मूल श्रृंखला- ग्लोबल वैल्यू चैन में हिस्सेदारी तरह बढ़ा पाएंगे और मेरक इन इडिया व इनोवेट इडिया की अवधारणाओं के मिलाकर, एक आत्मनिर्भर भारत बनाने की दिशा में अग्रसर हो पाएंगे, इसी से भारत सक्षम एवं विकसित भारत बन सकेगा, यही नया भारत होगा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने निरन्तर स्थानीयता के उत्पाद को प्रोत्साहन देते हुए विकसित भारत का सपना देखा है। यह कारण है कि इनोवेशन का निर्धारण करने वाली ग्लोबल इंडेक्स में भारत छिले सालों में लगातार छलांग लगा रहा है। इस दशक की छलांग के साथ महत्वपूर्ण यह भी है कि भारत ने ऊर्जावादी की ओर सतत सफर जारी रखा है, उसकी दिशा एवं दृष्टि स्पष्ट है। यह

पायापक ना हो परा सहा इत्ता न जा
है। विशेषकर स्टार्टअप के लिए बेहतर माह
तैयार करने और नवाचार को बढ़ावा देने
काम उल्लेखनीय है। नि:संदेह देशवासियों
व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयासों के साथ
सरकार को भी इसका श्रेय है, जिसने
स्टार्टअप के लिए आधारस्थूत संरचना
मजबूती देने के लिए बहुत कुछ किया
ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स की सूची ने भारत
इन प्रयासों को प्रमाणित किया है। साथ
आगे भारत के लिए वर्षा गुंजाइश है, इसमें
भी प्रकाश डाला है। इसमें 3 अहम यह है
देश के सिंपिंग चार बड़े शहर बैंगलूरु, चेन्नई,
दिल्ली और मुम्बई ही इनोवेशन में बेहतर
शहरों में अपना नाम दर्ज करा पाए हैं। भारत
के अन्य शहर इस सूची में दूर-दूर तक रहे
हैं। देश में इनोवेशन का दिल, दिमाग 3

ताना नहीं लगता। साफ सन्धार सकता है कि देश के अन्य इलाकों में वाली लार्यो-करोड़े प्रतिभाओं को प्रत्यक्ष में कहीं बड़ी कसर रह रही है, सरकार निष्पक्षता से नव-प्रतिभाओं, नव-विचारों क्षेत्रों को प्रोत्साहन देना चाहिए। इनोवेशन बढ़ावा देने के लिए यह जरुरी है कि सरकारिकारी और बुनियादी रूप से नए दावाले विचारों को भी वित्त-पोषित किया और उन्हें बाजार तक पहुंचाने की इच्छा विकसित की जाए।

पूंजी के बिना, सबसे परिवर्तनकारी विभी, पहली उड़ान भरने से पहले ही, धरात हो सकते हैं। जब तक हम फंडिंग-फाईंडर इकोसिस्टम बनाने में सक्षम नहीं हो जाते तब भारत में इनोवेशन-तंत्र एक दूर सपना बना रहेगा।

शक्ति-पूजा का पर्व है दशहरा



वृद्ध समाज इतना फ्रुटित ॥

उपाक्षत क्या है, एक अहम प्रश्न है। अपने
र को समाज में एक तरह से निष्प्रयोज्य समझे
जाने के कारण वह सवाधिक दुःखी रहता है। वृद्ध
समाज को इस दुःख और संत्रास से छुटकारा दिलाने
के लिये ठोस प्रयास किये जाने की बहुत आवश्यकता
है। संयुक्त राष्ट्र ने विश्व में बुजुर्गों के प्रति हो रहे
दुर्व्यवहार और अन्याय को समाप्त करने के लिए
और लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए
में
की
ग इसे
पर्पित एक
अंतरराष्ट्रीय बुजुर्ग दिवस मनाने का
निर्णय लिया

दिन महापूजा की जाति है। विशेष पूजा का आयोजन प्रसाद चढ़ाया जाता है और किया जाता है। पुरुष आपस करते हैं, जिसे कोलाकुली यां देवी के माथे पर सिंदूर देवी को अश्रुपूरित विदाई देती ही वे आपस में भी सिंदूर सिंदूर से खेलते हैं। इस दिन कक्षी को देखना बहुत ही शुभ अन्त में देवी प्रतिमाओं को लिए ले जाया जाता है। वह यात्रा भी बड़ी शोभनीय होती है। गुजरात में मिट्टी घड़ा देवी का प्रतीक माना जाता है। इसको कुवारी लड़कियां सिर क लोकप्रिय नृत्य करती हैं। हाजारों देवी जाता है। गरबा नृत्य इस दृष्टि। पुरुष एवं स्त्रियां दो छोटे संगमत की लल्य पर आपस में यूम धूम कर नृत्य करते हैं। वर पर भक्ति, फिल्म तथा लोक-संगीत सभी का होता है। पूजा और आरती डाँडिया रास का आयोजन होता रहता है। नवरात्रि में गहनों की खरीद को शुभ जाता है। कश्मीर के हिन्दू नवरात्रि के पर्व को नामते हैं। परिवार के सारे नौ दिनों तक उपवास करते नौनी परम्परा के अनुसार नौ माता खीर भवानी के दर्शन जाते हैं। ऐसा माना जाता है युक्त दशमी को तारा उदय विजय नामक मुहूर्त होता है। कार्य सिद्धिदायक होता है। से विजयादशमी कहते हैं। लंगाना, आंध प्रदेश एवं गहरा नौ दिनों तक चलता है और करते हैं। पहले तीन दिन धन देवी लक्ष्मी का पूजन होता है। दिन कला और विद्या की की अर्चना की जाती है और देवी शक्ति की देवी दुर्गा की है। पूजन स्थल को अच्छी दीपकों से सजाया जाता है। को मिठाइया व कपड़े देते रा बच्चों के लिए शिक्षा या कार्य सीखने के लिए शुभ

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे

सुनाल कुमार महल
यह संसार जिसमें हम रह रहे

भौतिकवादी संसार है। आज यहाँ स्वाधेर सर्वोपरि हो गया है। स्वाधेर इतना नहीं होना चाहिए कि हम दूसरों की खुशी छीन लें। संस्कृत में कहा गया है—" वृक्षीणफलं त्यजन्ति विहगः शुष्कं सरः सारसः। निर्द्रव्यं पुरुषं त्यजन्ति गणिकं भ्रष्टं नृपं मन्त्रिणः। पुरुषं पर्युषितं त्यजन्ति मधुपाः दग्धं बनान्तं मृगाः सर्वं: कार्यवशात् जनोऽभिरमते तत् कस्य को वल्लभः।" इस क्षेत्र का अर्थ यह है कि बगैर फल के वृक्ष का पंछी त्याग करते हैं; सारस सूखे सरोवर का, गणिका निर्द्रव्य पुरुष का, मंत्री भ्रष्ट राजा का, भौंरे रसहीन पुरुषों का, और हिन्दू जलते वन का त्याग करते हैं। सब लोग (किसी न किसी) बजह से प्यार करते हैं, अन्यथा कौन किसे प्रिय है? इस संसार में मनुष्य पदार्थ प्राप्ति के लिए अपनी जी-जान तक लगा देता है दूसरे शब्दों में कहें तो, हम स्वार्थी हैं और स्वार्थ ठीक नहीं होता। वास्तव में यह संसार स्वार्थ के लिए ही अपना बनता है। दूसरों को हानि पहुंचाकर अपने हितों को साधना क्या सही कहा जा सकता है? बिल्कुल नहीं, यह ठीक नहीं कहा जा सकता है। वास्तव में स्वार्थ स्वयं को प्राथमिकता देता है जबकि यदि हमें इस संसार में खण्ड

रहना ह, शात् स जावन अतात करना
है तो हमें स्वार्थ को हर हाल में छोड़ना
होगा, क्योंकि कहीं न कहीं स्वार्थ दुखों
का कारण बनता है। स्वार्थ के वशीभूत
आदमी सिर्फ और सिर्फ अपना
व्यक्तिगत हित, भलाई देखता है, उसे
दूसरों की कोई भी परवाह या फिक्र नहीं
होती। स्वार्थ में हम दूसरों के हितों की
अवहेलना कर बैठते हैं। इश्वर ने हमें
जीवन दिया है तो स्वार्थी बनने के लिए
नहीं दिया है, क्योंकि जब हम स्वार्थी
होते हैं तो केवल और केवल अपना
सुख, अपनी भलाई देखते हैं, दूसरों की
भलाई, उनके सुख दुख की तर्जिक भी
परवाह नहीं करते हैं, जो कि गलत है।
क्या भगवान ने हमारी रचना इसीलिए
की है कि हम केवल अपना ही पेट
भरें, हम अपने हितों को साधते रहें एवं
अपने परिवार के भरण-पोषण में ही
संसार में स्वयं को भुला दें और उस
भगवान को भूल जाएं, जिसने हमें इस
संसार में भेजा ? कबीर जी कहते हैं
कि—"कबीर मनिषा जनम दुर्लभ है, देह
न बारबार तरवर थैं फल झ़िड़ि पड़या,
बहुरि ना लागै डार।" यानी कि जैसे
पेड़ से एक बार पत्ता यादि टूटकर दूर हो
जाता होता उसे पुनः जोड़ा नहीं जा
सकता है वैसे ही मनुष्य जीवन भी जब
समाप्त हो जाता है तो पुनः प्राप्त नहीं
किया जा सकता है। भाव है कि मनुष्य

जापन अतिथि हा दुप्लम हो जा कराडा।
यत्रों के उपरान्त मिलता है और इसका
मूल उद्देश्य हरि या भगवान का सुमिरण
करना, अपेमालिक का शुक्रिया अदाना
करने नेकी से जीवन व्यतीत करना है और
यह सब तभी संभव हो सकता है कि
जब हम निःस्वार्थी हों एक स्वार्थी
व्यक्ति दुनिया की अच्छी चीजों में
जितना संभव हो उतना बड़ा हिस्सा ले
की कोशिश करता है। सच तो यह है
कि स्वार्थी व्यक्ति स्वयं का आनंद
दूढ़ता है, दूसरों के आनंद की उसे
परवाह या फ़िक्र नहीं होती स्वार्थी हर
चीज का अनुचित हिस्सा लेते हैं, और
दूसरों को अपने सुख की प्राप्ति के
साधन के रूप में इस्तेमाल करने की
पूरी कोशिश करते हैं खुश रहने का
सबसे अच्छा तरीका है दूसरों को खुश
करना और कोई भी दूसरों को तभी
खुश रख सकता है जब वह निःस्वार्थ
भाव से काम करे। जब आप निःस्वार्थ
होते हैं तो आपको हृदय में एक नवीन
खुशी का अहसास होता है संस्कृत में
कहा गया है- "निर्धनं पुरुषं वेश्या प्रज
भग्नं नृपं त्यजेत । खगा वीतफलं वृक्षं
भुक्ता अभ्यागता गृहम् ॥" यानी कि
वेश्या निर्धनं पुरुष का, प्रजा पदभ्रष्ट
राजा का, पंछी फलरहित वृक्ष का, और
खाने के पश्चात महेमान घर का त्याग
करते हैं (अर्थात् स्वार्थसिद्धि के बाद

सब चल जात ह)। बरहाल, था कहना चाहूंगा कि स्वार्थ शब्द बुरा नहीं है। इस संसार में सभी स्वार्थ के कारण ही अपने बनते हैं। सारा संसार ही स्वार्थ के लिए अपना बनता है परंतु चतुर व्यक्ति वही है जो बिना किसी स्वार्थ के गुणी आदमी का सम्मान करता है। तभी शायद कबीर जी ने कहा है- "स्वारथ का सबको सगा, सारा ही जग जान बिन स्वारथ आदर करे, सो नर चतुर सुजान।" हमें अपने प्रयोजन सिद्धि के लिए दूसरों को नुकसान या हानि नहीं पहुंचानी है। मनुष्य ने अपनी स्वार्थपरता के कारण इस धरती को भी कहीं का नहीं छोड़ा है। पर्थी जो कि हमारे जीवन का आधार है उसे भी अपने स्वार्थ के लिए नुकसान पहुंचा रहा है। आज धरती का पर्यावरण प्रदूषित हो गया है। सूर्य, पवन, वरुण और वन-वृक्ष निःस्वार्थ हैं। यदि ये स्वार्थ साधना में मग्न हो जाएं तो वर्तमान सुष्टि का क्या होगा ? सभी स्वार्थी होंगे तो सब नष्ट हो जायेगा। स्वार्थपूर्ण जीवन सबसे दुखदायी जीवन है। कबीर दास जी कहते हैं- "वृक्ष कबहुँ नहिं फल भरवै, नदी न संचै नीर परमारथ के कारने, साधुन धरा सरीर।" भावार्थ यह है कि साधु का स्वभाव परोपकारी होता है, जैसे वृक्ष कभी अपना फल स्वयं नहीं खाता है।

जो नदा जिस प्रकार से स्वयं का नार का संचय नहीं करती है वैसे ही साधु और संत भी अपने ज्ञान का उपयोग परमार्थ के लिए ही करते हैं, स्वयं के कल्याण के लिए नहीं। सच तो यह है कि प्रकृति सदा देने का भाव रखती है वह बदलें में कुछ भी नहीं चाहती है। जो मनुष्य मोह माया एवं स्वार्थ में फंसे रहते हैं, वे अपने अंत समय में पछताते हैं और जो इनसे स्वयं को मुक्त कर लेते हैं, वे समाज और देश के काम आते हैं। वास्तव में, स्वार्थ एवं अपने संकीर्ण विचारों के कारण ही हम अपना एवं अपने समाज, अपने परिवार, अपने राष्ट्र का उत्थान नहीं कर पाते हैं यदि हम स्वार्थ की भावना से ऊपर उठकर जीवन जिएं तो हम सभी का भला कर सकते हैं। तो आइए हम दूसरों के लिए जीवन जीने का प्रयास करें, स्वार्थ छोड़ें, क्योंकि स्वार्थ में तो सभी जीते हैं। अंत में मैथिलीशरण गुप्त जी के शब्दों में यही कहूँगा कि—"विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी-मरो परन्तु यों मरो कि याद जो करे सभी। हुई न यों सु-मृत्यु तो वृथा मरें वृथा जियें मरा नहीं वहीं कि जो जिया न आपके लिए। यही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरेम वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।"

दुनिया के नवाचार में भारत की छलांगें एक बड़ी उपलब्धि

बैंक लुटेरे देश भगोड़े

डॉ. सुरेश कुमार
बैंक लूटेरे देश भगोड़े दुनिया के
कोने-कोने में जाकर बस गए। एक
दिन इन सारे भगोड़ों ने निर्णय
किया कि हमें कहीं मिलना चाहिए।
मिलकर बैंक लूटने और उसके
बाद की लिंगति के बारे में चर्चा
करनी चाहिए। सभी ने एक निश्चित
तारीख और स्थान तय कर उस
दिन पहुँच गए। वहाँ राजामछुआरा
कुल्या, खीरा जिवी, जहर चुस्की,
चलित खोदी, गंजू बालझड़ा,
तुम्च कालिख, बरिष्ठाश लूटपुत्र,
फीतेश रिटेल, धनू खायल,
निर्जीव छेदी एक से बढ़कर एक
बैंक लूटेरे इकट्ठा हुए थे। कड़ी
टुपहरिया में रिसॉर्ट बाहर की गर्मी
से ज्यादा इन लोगों की गर्मी से
थरथरा रहा था। सब आपस में
बैंक लूटने के अपने अनुभव छाती
दोकूकू बता रहे थे जीर्ण जिवी ने

इस रिसाट में आना अच्छा हुआ।
दानवीर अपना हाल बताए या न
बताए लेकिन लुटेरों, चोरों और
भगोड़ों को जरूर बताना चाहिए।
इससे छिपने, बहाने बनाने, दूसरों
से पिंड हुड़ाने के नए-नए उपाय
मिलते हैं।

चलित खोदी -अब आ ही गए हैं
तो बीपीएल करवा दें? तुम्चिच
कालिख ने पूछा इन्हें यह बीपीएल
क्या होता है? चलित खोदी और
यारो! इतना भी नहीं समझते।
बीपीएल का मतलब है भगोड़े
प्रिमियर लीग। इतना सुनना था कि
सभी ठहाके मारकर हँसने लगे।
उधर दूसरी ओर राजामछुआरा
कुल्या कैलेंडर बाटुकोण के हाथों
सुरा पान करते हुए बीच में कूद
पड़ा इन्हें कुछ भी कहो भगोड़ो! हम
ने जो भी किया है बड़ी बहादुरी का
कूप किया है। इस किसी

विदेश संदेश

पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के खिलाफ ऑडियो लीक मामले में होगी कार्रवाई, शहबाज सरकार ने दी मंजूरी

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के खिलाफ ऑडियो लीक मामले में कानूनी कार्रवाई शुरू करने के लिए पाकिस्तान की शहबाज सरकार ने मंजूरी दे दी। हाल ही में लोक हुए ऑडियो के पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के तीन नेताओं को पार्टी के अध्यक्ष इमरान खान के साथ अमेरिकी साइबर के बारे में बात करते हुए सुना जा सकता है।

लोक हुए इस ऑडियो में खान अपनी सरकार को गिराने की कथित सचिवित के बारे में भी बात कर रहे थे। इस ऑडियो लीक का संज्ञान लेते हुए शहबाज कैबिनेट



ने 30 सितंबर को एक समिति का गठन किया था। समिति ने इस ऑडियो लीक को लेकर कानूनी

कार्रवाई की सिफारिश की। रिपोर्ट के अनुसार कैबिनेट समिति ने सिफारिश की है कि यह राष्ट्रीय

सुरक्षा का मामला है, जिसका राष्ट्रीय हितों पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। इस संबंध में कानूनी कार्रवाई महत्वपूर्ण है। संघीय जांच एजेंसी को अमेरिकी साइबर और ऑडियो लीक की जांच का काम सौंपा जाएगा। इस बात, पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज वी नेता मरियम नवाज शरीफ ने शनिवार को इतने सारे आरोप होने के बावजूद इमरान खान को गिरफ्तार नहीं करने पर अपनी पार्टी की शहबाज सरकार को घेरा। वहीं, वित्त मंत्री इस्हाक डार ने कहा कि खान सत्ता के भूमि हैं और 'किसी भी कीमत पर' देश करते हुए दिखाया गया है। उसने गुरुवार को रक्षा मंत्री हुल्सी

इराक में तुर्की के हवाई हमले में 23 कुर्द आतंकवादी मारे गए

इस्तांबुल। इराक में तुर्की के हवाई हमले में 23 कुर्द आतंकवादी मारे गए। तुर्की के रक्षा मंत्रालय ने यह जानकारी दी।

जानकारी के अनुसार स्वायत्त कुर्दिस्तान क्षेत्रीय सरकार द्वारा नियंत्रित उत्तरी इराक के असेक्युरिटी क्षेत्र में कई गई इस कार्रवाई में हताहों की संख्या बढ़ने की आशंका है।



अकार के एक बयान का हवाला असोस क्षेत्र में हवाई हमलों ने 16 दिया, जिसमें उहोंने कहा कि ठिकानों को निशाना बनाया। तुर्की

2019 से उत्तरी इराक में कई अभियान चला रहा है। उसका कहना है कि सेना कुर्दिस्तान वर्कर्स पार्टी या पीकक को निशाना बना रही है, ताकि उसे तुर्की पर सीमा पार से हमले शुरू करने से रोका जा सके।

सूखे को तुर्की, अमेरिका और यूरोपीय संघ द्वारा एक आतंकवादी संगठन के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। रक्षा मंत्रालय ने बद्र में कहा कि एक मिसाइल हमले में तुर्की के एक पुलिस अधिकारी के मार जाने के जवाब में उत्तरी सीरिया में सात आतंकवादियों को मार गिराया था।

दोनबास में जीत की ओर यूक्रेन, यक्रेनी वायुसेना ने 24 घंटे में किए 29 हमले

दोनेस्क प्रांत। यूक्रेन के पूर्वी इलाके में दोनेस्क प्रांत के लायमन को रूसी कब्जे से मुक्त कराया जाने से यूक्रेन का राष्ट्रपति जेलोदीपर जेलेस्की उत्पादित है। लायमन को दोनबास (पूर्व) में सबसे अहम रणनीतिक मोर्चा बताते हुए जेलेस्की ने कहा, यहां से ज्यादा अपमानजनक है, क्योंकि यह उस दोनेस्क प्रांत का हिस्सा है, जिसका रूस में विलय हो चुका है। रूसी लोग इसे रूस की जमीन पर यूक्रेनी कब्जे के तौर पर देख रहे हैं और वहां से सेना के पीछे हटने को लेकर सेना की दलितों से खुश ही हैं। अमेरिकी रक्षा मंत्री ऑस्टिन लॉरेन्स ने यूक्रेनी सेना की तारीफ की। रूसी ऑस्टिन के रूपांतर का एक नाम था। वहां, लायमन पर कब्जे से यूक्रेन को पूर्वी मोर्चे पर बढ़ी बढ़त बनाने में मदद मिलेगी, क्योंकि यहां से अब

व्यादिमीर पुतिन के खास दोस्तों में शामिल चेचेन कांडांगर स्पाजान कारिदेव ने पुतिन को बिना देर किए हल्के परमाणु हथियार के इस्तेमाल की सलाह दी है। बहरहाल, लायमन से रूसी सेना का हटाना इस बजाए से ज्यादा अपमानजनक है, क्योंकि यह उस दोनेस्क प्रांत का हिस्सा है, जिसका रूस में विलय हो चुका है। रूसी लोग इसे रूस की जमीन पर यूक्रेनी कब्जे के तौर पर देख रहे हैं और वहां से सेना के पीछे हटने को लेकर सेना की दलितों से खुश ही हैं। अमेरिकी रक्षा मंत्री ऑस्टिन लॉरेन्स ने यूक्रेनी सेना की तारीफ की। रूसी ऑस्टिन के रूपांतर का एक नाम था। वहां, लायमन पर कब्जे से यूक्रेन को पूर्वी मोर्चे पर बढ़ी बढ़त बनाने में मदद मिलेगी, क्योंकि यहां से अब

यूक्रेन को रक्षात्मक बने रहने की जरूरत नहीं होगी और खुलकर रूसी ठिकानों को निशाना बनाया जा सकेगा।

यूक्रेनी वायुसेना ने 24 घंटे में किए 29 हमले

यूक्रेनी वायुसेना ने रेविवर सुबह बताया कि उसके फाइटर जेटों ने जीते 24 घंटे में 29 हमले किए हैं। इन हमलों में रूसी सेना के हथियारों और भंडार, एटी एयरक्राफ्ट मिसाइल सिस्टम और कमांड पोस्ट तबाह किए हैं। इसके साथ ही यूक्रेन ने दावा किया कि रूस की तरफ से चार मिसाइल सिस्टम वे 16 हवाई हमले किए गए। वहीं, रूस ने बताया कि रेविवर को खाकोन को रेविवर को खाकोन के रूसी सेना ने यूक्रेन को पूर्वी मोर्चे पर बढ़त मूल्यवान है।

यूक्रेनी वायुसेना ने रेविवर सुबह बताया कि उसके फाइटर जेटों ने जीते 24 घंटे में 29 हमले किए हैं। इन हमलों में रूसी सेना के हथियारों और भंडार, एटी एयरक्राफ्ट मिसाइल सिस्टम और कमांड पोस्ट तबाह किए हैं। इसके साथ ही यूक्रेन ने दावा किया कि रूस की तरफ से चार मिसाइल सिस्टम वे 16 हवाई हमले किए गए। वहीं, रूस ने बताया कि रेविवर को

खाकोन में रूसी सेना ने यूक्रेन के सात आउथ भंडारों को तबाह किया, जिसमें मिसाइल और तोपों को खाया गया था।

पोप की गुहार, हिंसा रोकें पुतिन

पोप फासिस ने पुतिन से गुहार लगाई कि वे यूक्रेन में जारी हिंसा को रोकें। पुतिन की तरफ से परमाणु हथियारों के इलेमाल की चेतावनी के संदर्भ में पोप ने कहा कि यूक्रेन को शांति के प्रस्तावों पर गंभीरता से विचार करना चाहिए।

इटली की गैस आपूर्ति रोकी

यूक्रेनी इलाकों के रूस में विलय पर इटली की गैस स

राष्ट्रीयता पर रोका गया था।

आपूर्ति रोक दी है। इसके अलावा रूस के विदेश मंत्रालय ने रूस में इटली के राजदूत से राजों को भी रोका गया है।

गैर आपूर्ति को रोकने के पीछे रूसी कंपनी गैजप्रॉम का दावा है कि ऑस्ट्रिया में हुए प्रशासनिक फेरबदल की वजह से यह हुआ है।

रसद के लिहाज से अहम

लायमन को रूसी सेना ने मई में कब्जे में लिया था। पूर्वी मोर्चे पर पूरे दोनबास में रसद के लिहाज से यह राजनीतिक तौर पर बेद्र अहम जाग है। विशेषज्ञों के मुताबिक रूसी सेना का लायमन से यह राजनीतिक तौर पर बेद्र अहम जाग है।

लायमन को रूसी सेना ने रूसी सेना ने यह राजनीतिक तौर पर बेद्र अहम जाग है। विशेषज्ञों के मुताबिक रूसी सेना का लायमन से यह राजनीतिक तौर पर बेद्र अहम जाग है।

यूक्रेनी इलाकों के रूस में विलय पर इटली की गैस से यह राजनीतिक तौर पर बेद्र अहम जाग है।

यूक्रेनी इलाकों के रूस में विलय पर इटली की गैस से यह राजनीतिक तौर पर बेद्र अहम जाग है।

यूक्रेनी इलाकों के रूस में विलय पर इटली की गैस से यह राजनीतिक तौर पर बेद्र अहम जाग है।

यूक्रेनी इलाकों के रूस में विलय पर इटली की गैस से यह राजनीतिक तौर पर बेद्र अहम जाग है।

यूक्रेनी इलाकों के रूस में विलय पर इटली की गैस से यह राजनीतिक तौर पर बेद्र अहम जाग है।

यूक्रेनी इलाकों के रूस में विलय पर इटली की गैस से यह राजनीतिक तौर पर बेद्र अहम जाग है।

यूक्रेनी इलाकों के रूस में विलय पर इटली की गैस से यह राजनीतिक तौर पर बेद्र अहम जाग है।

यूक्रेनी इलाकों के रूस में विलय पर इटली की गैस से यह राजनीतिक तौर पर बेद्र अहम जाग है।

यूक्रेनी इलाकों के रूस में विलय पर इटली की गैस से यह राजनीतिक तौर पर बेद्र अहम जाग है।

यूक्रेनी इलाकों के रूस में विलय पर इटली की गैस से यह राजनीतिक तौर पर बेद्र अहम जाग है।

यूक्रेनी इलाकों के रूस में विलय पर इटली की गैस से यह राजनीतिक तौर पर बेद्र अहम जाग है।

यूक्रेनी इलाकों के रूस में विलय पर इटली की गैस से यह राजनीतिक तौर पर बेद्र अहम जाग है।

यूक्रेनी इलाकों के रूस में विलय पर इटली की गैस से य